4/3/09 हिन्दुस्तान

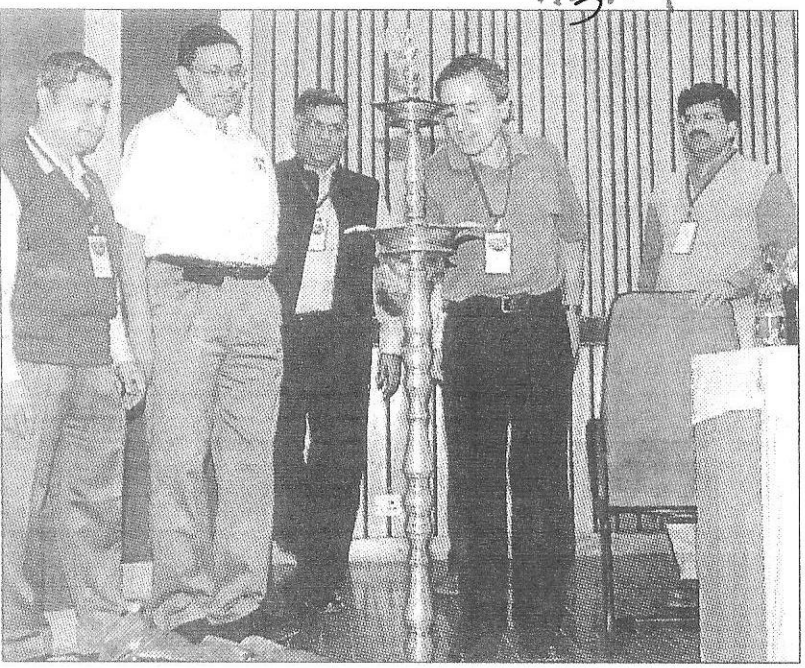

कंकरीट के बाँधों की भूकम्परोधी डिजाइन पर शार्ट कोर्स आईआईटी में शुरू

बाँध पर खतरा भाँपने आए अमेरिकी

कार्यालय संवाददाता कानपुर

■ अब भूकम्परोधी बाँध बनाना जरूरी, पुराने बाँधों को भी ठीक कराने की कवायद

भूकम्प की दृष्टि से उत्तर भारत उतना ही संवेदनशील है, जितना अमेरिका में कैलीफोर्निया। भूकम्प को आने से तो रोका नहीं जा सकता लेकिन थोड़ा प्रयास करने से इसके खतरों से कुछ हद तक बचाव किया जा सकता है। देश में कंकरीट बाँध अधिक हैं और अमेरिकी वैज्ञानिकों की टीम इनका निरीक्षण कर यह पता लगाने की कोशिश करेगी कि कौन से बाँध कमजोर हैं और इसे कैसे मजबूत और भूकम्परोधी बनाया जा सकता है।

आईआईटी में 'सेस्मिक डिजाइन ऑफ कंकरीट ग्रेविटी डैम्स' (कंकरीट के बाँधों की भूकम्परोधी डिजाइन) विषय पर मंगलवार से शुरू हुए शार्ट कोर्स में भाग लेने आए यूएस ब्योरो ऑफ रीक्लेमेशन, डेंवर के लैरी के नस ने बताया कि नए बाँध में तो नवीन तकनीक का इस्तेमाल हो जाता है लेकिन ऐसे बाँध जो काफी पुराने हैं उन्हें भी विकसित तकनीक से भूकम्परोधी बनाया जा सकता है। वे इसके विशेषज्ञ हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया, बर्कले के प्रोफेसर अनिल कुमार चोपड़ा ने बताया कि किसी भी बाँध का तकनीकी निरीक्षण कर यह पता लगाया जा सकता है कि भूकम्प से इसमें कितना नुकसान हो सकता है। कोर्स संयोजक प्रोफेसर सुधीर कुमार जैन ने बताया कि देश में सैकड़ों कंकरीट बाँध हैं और इनमें कुछ काफी पुराने हैं जो कभी भी खतरा बन सकते हैं। दोनों अमेरिकी सदस्य इसके विशेषज्ञ हैं और वे कोर्स में आए करीब 80 से अधिक प्रतिभागियों को इसकी ट्रेनिंग दे रहे हैं। इससे पूर्व कोर्स के उद्घाटन सत्र में सिविल इन्जीनियरिंग विभाग के मुखिया प्रो. ओंकार सिंह और दुर्गेश राय ने भी भाग लिया।